राजस्थान की प्रमुख वेशभूषा

① **पुरुषों के वस्त्र :→**

(i) **सिर पर धारण किये जाने वाले वस्त्र**

→ पाग | पगड़ी | पेचा | सेलो | अमलो | फेंटा | साफा | बागा

पगड़ी के प्रकार :→ उदयशाही, विजय शाही, विमलशाही, भीम शाही, खंजरशाही, शाहजहानी, मदूं पट्टी, उपरशाही, मांडपाशाही, चूड़ावती मानशाही

विभिन्न अवसरों की पगड़ी :→

विवाह - मोठड़े की पगड़ी

दशहरा → जरीदार पगड़ी | मदील पगड़ी

वर्षा ऋतु मे → हरी या काठुमल पगड़ी

सर्दी मे → कसुंबी

मांगलिक - पीली | बसंती

शोक - सफेद

रणभूमि मे - केसरिया

होली → पंचरंगी

वातावरण के अनुसार पगड़ी

चैत्र - गुलाबी

वैशाख - जवाई

आषाढ़ → मोमाशाही

श्रावण → लहरिया

भाद्रपद → मलयगिरी

कार्तिक → सिन्दुरी

नोट- बचेज द्वारा पाँच रंगों मे रंगा साफा → पावरा

② **अंगरखी** :- पुरुषो द्वारा शरीर के ऊपरी भाग मे पहना जाने वाला वस्त्र इसके बाँहे नहीं होती

रंग - सफेद

ग्रामीण भाषा मे इसे → बुगतरी / तनसुख / अचकन / कालबंदी कहते है

→ चोगा → विशेष अवसरो की पोशाक जिसका छोर घुटनो तक होता है।

→ जामा → शरीर के ऊपरी भाग मे पहनते थे (युद्ध के समय)

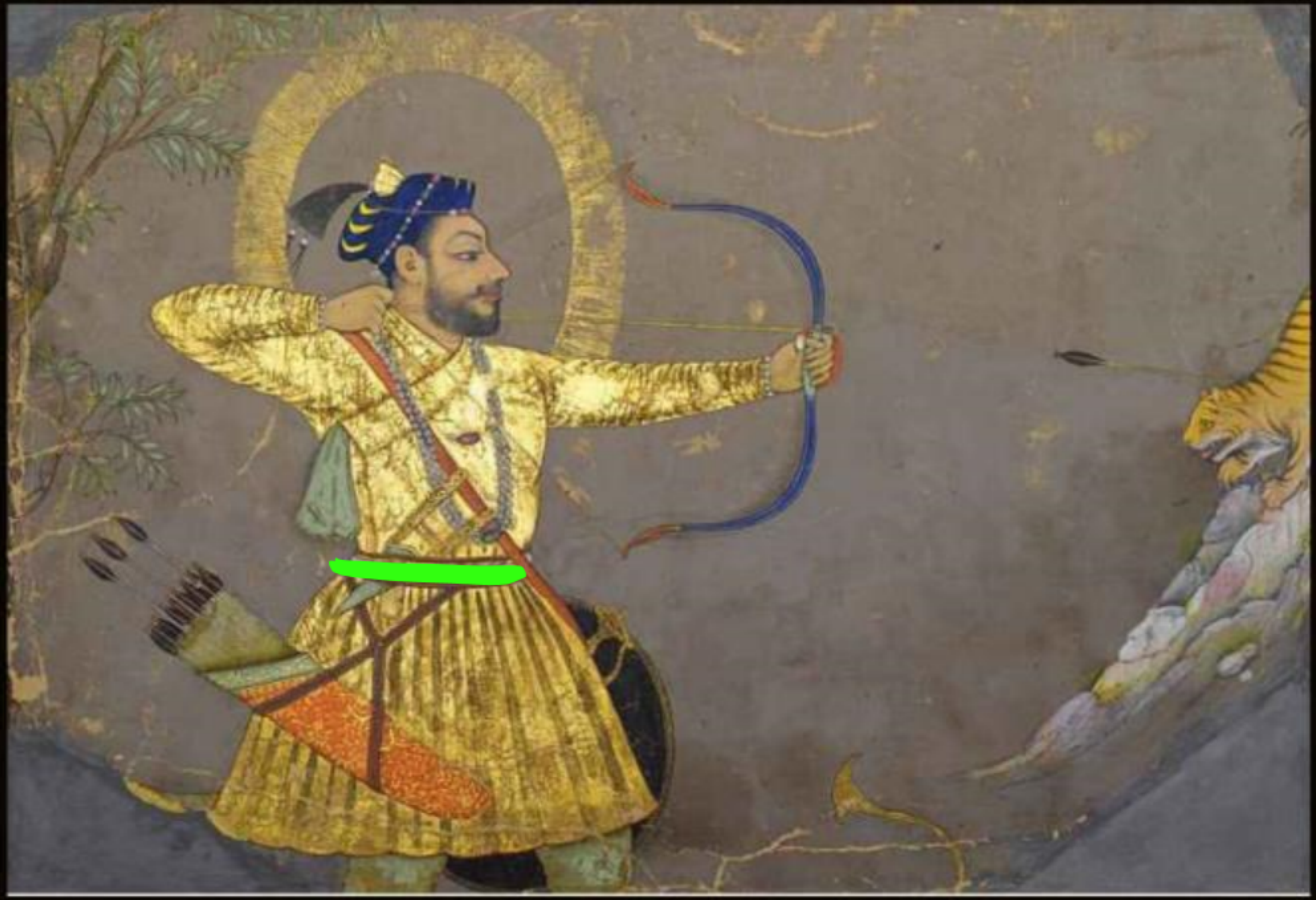

→ **शेरवानी** → दुल्हे का वस्त्र विवाह में पहनते है।

→ **धोती** → कमर पर पहनते है।

→ **पायजामा** → कमर से पैर तक

→ **घुग्गी** → वर्षा से बचाव हेतु ओढ़ते है।

→ **पछेवड़ा** → सर्दी से बचाव हेतु ओढ़ते है।

नोट :→ पगड़ी पर पहना जाने वाला जरीदार वस्त्र → बालाबन्द

पगड़ी पर बांधा जाने वाला वस्त्र → उपरणी

पगड़ी पर पहना जाने वाला आभूषण → रतन पेच

→ **कमरबंद / पटका** → कमर पर पहनते है तलवार आदि रखने हेतु

→ **बिरजस / ब्रिजेस** → चुड़ीदार पायजामा

→ **आतम सुख** → सर्दी मे पहनते है और घुटनो तक होता है

→ <u>सुथना</u> → सर्दी से बचाव हेतु बच्चों का वस्त्र (पायजामा)

महिलाओं के वस्त्र

→ **कुर्ती काँचली** :→ स्त्रीयों द्वारा शरीर के उपरी भाग मे पहना जाता

कुर्ती → बिना बाँहो की

काँचली → बाँहे होती है

कापड़ी → महिलाओं द्वारा शरीर के उपरी भाग मे पहना जाता है।

→ **घाघरा / पेटीकोट / लहंगा** → महिलाओं का कमर पर पहना जाने वाला वस्त्र

नोट - रेशमी घाघरा - जयपुर का प्रसिद्ध है।

नोट - ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित महिलाओं का घाघरा - घाघला कहलाता है।

साड़ी →

खुंट की साड़ी → सवाई माधोपुर

कोटा डोरिया साड़ी → कैथुन (कोटा)

फुल साड़ी → जोबनेर (जयपुर)

ओढनी → महिलाओं का वस्त्र सिर पर ओढा जाता है।

पोमचा → जच्चा स्त्री की ओढनी

पीला पोमचा → पुत्र जन्म पर ओढते है।

गुलाबी पोमचा → पुत्री जन्म पर " " "

→ पीड़ का पोमचा :- हाड़ौती क्षेत्र मे विधवा स्त्री की ओढनी

↳ रंग – काला

→ पँवरी → लाल या गुलाबी रंग की दुल्हन की ओढनी

आदिवासी पुरुषों के वस्त्र

① **अंगोछा** → सिर पर धारण करते है।
↳ सर्वाधिक लोकप्रिय अंगोछा - कैरी भाँत का

→ **नोट** → भीलों की तंग धोती ढेपाड़ा कहलाती है।

→ लंगोटिया भीलों द्वारा कमर पर पहना जाने वाला वस्त्र
→ खोयतू कहलाता है।

→ फालू : → भीलो द्वारा सिर पर लपेटा जाने वाला अंगोछा

आदिवासी महिलाओं के वस्त्र

→ **कटकी** → आदिवासी अविवाहित युवतियों की ओढनी

नोट → छपाई वाली ओढनी को पावली कहते है।

→ **रेनशाही** → लहंगो की छींट

→ **फड़का** → कथौड़ी जन जाति द्वारा मराठी अन्दाज मे पहना जाने वाला वस्त्र

→ **जामसाई साड़ी** → आदिवासी अविवाहित बालिकाओं द्वारा विवाह के अवसर पर पहना जाने वाला वस्त्र

→ **नांदणा / नानड़ा** : → आदिवासी महिलाओं का प्राचीन वस्त्र

→ **कछाबू** → भील महिलाओं द्वारा घुटनों तक पहना जाने वाला वस्त्र

नोट → **पिरिया** → भील जनजाति में शादी पे पहना जाने वाला पीले रंग का वस्त्र

→ **पंछा** → सहरिया जन जाति मे घुटनो तक पहना जाने वाला वस्त्र

→ **खुलकी** → गरासिया जन जाति मे शरीर के उपरी भाग मे पहना जाने वाला वस्त्र

राजस्थानी साहित्य

प्रकार

- पद्य
  - कविता
  - दोहे
- गद्य
  - उपन्यास
  - कहानी
  - निबंध

① **ख्यात** :→

इनकी रचना तत्कालीन राजाओं ने राजाओं ने अपनी मान मर्यादा एवं वंशावली हेतु करवाई।

② **वात** →

अर्थ कथा या कहानी

ऐतिहासिक व पौराणिक पात्रों पर कहानी

③ **वचनिका** :→ गद्य व पद्य की तुकान्त रचना।

④ **मरस्या** :→ राजा या किसी व्यक्ति विशेष के मरणोपरान्त उसका व्याख्यान करना।

⑤ **रासौ** :→ राजाओं की प्रशंसा मे लिखा ग्रंथ

राजस्थानी साहित्य का काल विभाजन

① वीरगाथा काल → वि.सं. 800 से 1460 तक

② मध्यकाल :→ वि.सं. 1460 - 1900 तक

③ आधुनिक काल → वि.सं. 1900 से वर्तमान . . . .

(1) वीरगाथा काल की रचना

(i) नेमीनाथ बारहमासा

↳ जैन कवि पाल्हण

वर्णन जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर नेमीनाथ का।

(2) पृथ्वीराज रासौ : → चंदबरदाई

↳ डिंगल व पिंगल साहित्य का मिश्रण

↳ भाग = 18

8 भाग - चन्द बरदाई

6 भाग - राजाबाई (पत्नी)

4 भाग कल्हण (पुत्र)

→ **बिसलदेव रासो** :- → नरपति नाल्ह

नोट :- ललित विग्रह - सोमदेव

→ **रणमल छंद** : → श्रीधर व्यास

→ **अचल दास खीची री वचनिका** : → शिवदास गाडण
(भाषा - डिंगल

→ **पृथ्वीराज विजय** : → जयानक (भाषा संस्कृत

→ विजय पाल रासौ :→ नल्ल सिंह

→ हम्मीर महाकाव्य → नयन चन्द्र सूरी

→ ढोला मारू रा दोहा :→ कवि कल्लोल
↳ भाषा - डिंगल

→ शिशुपाल वध → महाकवि माघ

मध्य कालीन साहित्य

→ **कान्हड़दे प्रबंध** :- पद्मनाभ

↳ जालौर के अखैराज चौहान के आश्रित कवि

→ **राव जैतसी रो छंद** :- बीठू सुजा

→ **पाबु रा छंद** / गोगा जी रा **रसावला** / **करणी जी रो छंद** / चांदा जी री वेल

↳ बीठू मेहा

→ **हाला झाला री कुण्डलियां** : → बारहठ ईसरदास

→ **विरुद छतरी | किरतारबावनी | झूलणा** : → दुरसा आढ़ा

नोट - **विरुद छतरी** → महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा

→ **राठौड़ रतन सिंह री वेली** : → दूदा विसराल

→ **संगत रासौ** → गिरधर आसिया

→ चेतावणी रा गीत / बाँकी दास री ख्यात :→ बाँकीदास

→ आईन-ए-अकबरी / अकबरनामा :→ अबुल फजल

→ एकलिंग महात्म्य → कान्हा व्यास

→ हम्मीर हठ / सुरजन चरित :→ चन्द्र शेखर

→ रुक्मणी हरण / नागदमण :→ सायां जी झूला

→ रजिया रा सौरठा :→ कृपाराम खिड़िया

→ ढोला मारू री चौपाई :→ कुशल लाभ

→ हम्मीर रासौ :→ कवि जोधराज

→ बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात :→ दयालदास सिंढायच

→ खुमाण रासौ → दलपत विजय

→ # वेली कृष्ण रुक्मणी री / कल्ला रायमलोत री कुंडलियाँ :→ पृथ्वीराज राठौड़ (बीकानेर)

इसे कवि दुरसा आढ़ा ने 19 वां पुराण व 5 वाँ वेद कहा

→ मुहणोत नैणसी री ख्यात | मारवाड़ रा परगना री विगत → मुहणोत नैणसी (जोधपुर)

राजपूताने का गजेटियर

मुंशी देवी प्रसाद ने
राजपूताने का अबुल फजल
कहा मुहणोत नैणसी को।

आधुनिक कालीन साहित्य

① सूर्यमल मिश्रण :->

- जन्म - हरणा गाँव - बूंदी
- रचना -> वंश भास्कर ✓
  - वीर सतसई ✓
  - बलवंत विलास ✓
  - रामरंजाट ✓

-> शंकर दान सामौर :-> सुजानगढ़ (चुरू)

- सगती सुजस, भागीरथी महिमा, वखत रो बायरो

→ **रामनाथ व्यास :-**

पाबूजी रा सोरठा

द्रोपदी विनय

→ **मेघराज मुकुल**

↳ सैनाणी

आण री बात

चँवरी

→ **कन्हैयालाल सेठिया** :→ चुरू

↳ पाथल पीथल

मींझर

लीलटांस

माण्डः रो हेलो

वनफुल

धरती धोरा री

अरे घास री रोटी वन बिलावड़ो ले भाग्यो

चन्द्र सिंह बिरकाली :→ नोहर (हनुमानगढ़)

↳ बादळी
लू
बाजळ री कोर

श्री लाल नथमल जोशी :→ बीकानेर

आभै पटकी
धोरां रो धोरी
एक बीनणी दो बीन
परण्योड़ी कँवारी

→ विजय दान देथा : → बोरूंदा (जोधपुर)

↳ बातां री फुलवाड़ी (14 खण्ड)

मां रो बदलो

रूंख

उलझन

सपन प्रिया

चौधरी

तथ्य :-

① राजस्थानी की प्राचीनतम रचना

↳ भरतेश्वर बाहुबली घोर

↳ वज्रसेन सूरी

↳ भाषा मारु गुर्जर

② राजस्थानी भाषा का पहला उपन्यास

↳ कनक सुन्दर (शिवचन्द्र भरतिया

③ राजस्थानी का प्रथम नाटक → केसर विलास (शिवचन्द्र भरतिया

राजस्थान की प्रमुख प्रथाएं

→ सर्वाधिक प्रथाओं का प्रचलन राजपूत समाज मे था।

① **सती प्रथा** :→ पति की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी को जिन्दा उसके साथ दाह संस्कार जला देते थे।

उपनाम → सहमरण, सहगमन, अन्वारोहण

सर्व प्रथम जानकारी का स्रोत → ① अथर्ववेद

Ⓘ एरण अभिलेख

राजस्थान मे सर्व प्रथम जानकारी

↳ घटियाला शिलालेख मे

↳ राणुका की पत्नी संपत देवी सती होने का प्रमाण

→ राज्य मे सर्व प्रथम सती प्रथा पर रोक - 1822 बूंदी

→ राजा राम मोहन राय के प्रयासो से लार्ड विलियम बेंटीक ने 1829 मे सती निवारक निरोधक अधिनियम पारित किया। और पूरे भारत मे प्रथा पर रोक लगा दी।

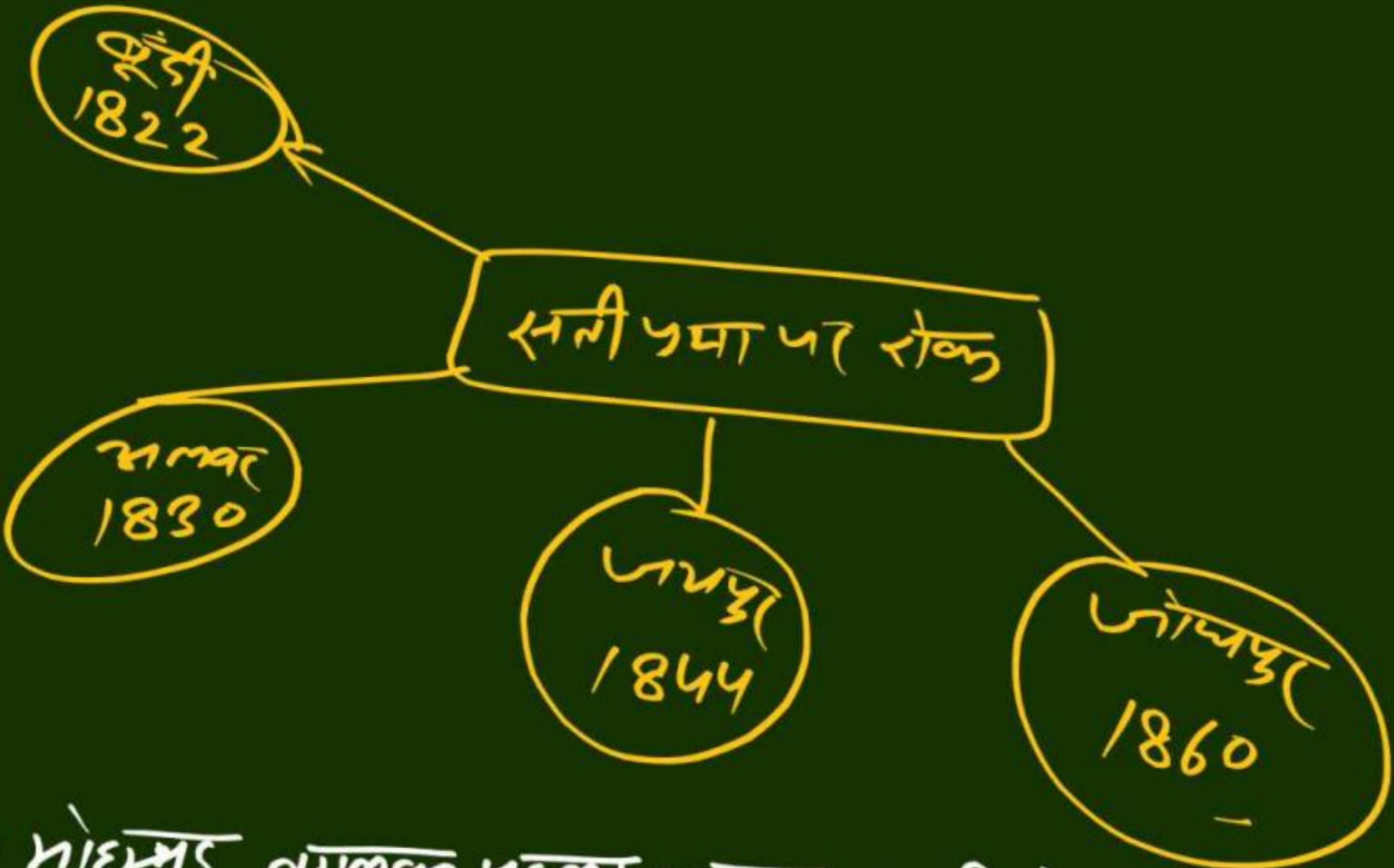

Note → मोहम्मद तुगलक पहला शासक था जिसने सती प्रथा पर अध्यादेश जारी किया

अन्तिम घटना : →

1987 → देवराला (नीम का थाना)

मोहन सिंह की पत्नी रानी रूप कंवर सती हुई।

→ राजस्थान सरकार ने सती प्रथा अध्यादेश - 1988 मे लागु किया।

अनुमरण : → पति की निशानी के साथ सती होना

Ex मालदेव की पत्नी उम्मा दे पगड़ी के साथ सती हुई।

माँ सती → पुत्र के साथ सती होना।

→ **विधवा विवाह :** →

↳ पति के मृत्यु हो जाने पर पत्नी को पूरा जीवन कष्टमय बिताना पड़ता था वह किसी भी शुभ कार्य मे भाग नही ले सकती थी।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासो से लार्ड कैनिंग ने 1856 मे विधवा पुर्नविवाह अधिनियम बनाया

→ राज्य मे सर्वप्रथम लागु जयपुर मे सवाई जयसिंह ने किया

बाल विवाह प्रथा :→

राज्य में इस प्रथा का सर्वाधिक प्रचलन था

बाल विवाह रोकने हेतु - हरविलास शारदा (अजमेर) ने 1929 मे शारदा एक्ट कानून पारित कर रोक लगाई।

1/अप्रैल/1930 → इसे सम्पूर्ण भारत मे लागु कर दिया।

Note → सर्वाधिक बाल विवाह → अक्षय तृतीया पर होते है।

कन्या वध प्रथा :-

सर्वाधिक प्रचलन - राजपूत समाज में।

लड़की का जन्म होते ही उसे अफीम देकर या गला दबाकर मार दिया जाता है।

सर्वप्रथम इस प्रथा पर रोक 1833 में कोटा के शासक उम्मेद सिंह ने पोलिटिकल एजेंट लुडलो के सहयोग से लगाई।

→ 1834 → बूंदी
→ 1836 → बीकानेर
→ 1839 → जोधपुर
→ 1844 - जयपुर

समाधि प्रथा :→

↳ कोई भी साधु संत मोक्ष प्राप्ति हेतु जमीन मे गड्ढा खोदकर या जल मे बैठकर मृत्यु प्राप्त कर लेता था।

इस प्रथा पर रोक जयपुर के पोलिटिकल एजेन्ट लुडलो ने रामसिंह II के आग्रह पर लगाई। (1844) मे।

डाकन प्रथा :→

सर्वाधिक प्रचलन → आदिवासी जनजाति मे (भील व मीणा)

किसी भी स्त्री पर डाकन/डायन/तांत्रिक होने का आरोप लगा दिया जाता था और उसे मौत के घाट उतार दिया जाता था।

इस प्रथा पर रोक – 1853 मे मेवाड़ भील कोर कमांड के कमांडेंट J.C ब्रुक ने उदयपुर के खैरवाड़ा मे लगाई।

केसरिया प्रथा :→ राजपूत योद्धा केसरिया रंग की पगड़ी पहनकर रणभूमि मे लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हो जाते थे।

जौहर प्रथा :→ वीर लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हो जाते थी तो उनकी पत्नियां अग्नि मे कुदकर या जल मे डूबकर अपने प्राण त्याग देती थी।

→ साका प्रथा — जौहर व केसरिया दोनो एक साथ होना।

Note → जौहर व केसरिया दोनो मे से एक हुआ तो उसे अर्द्ध साका कहते है

→ सागड़ी प्रथा :→

↳ इसे बन्धुआ मजदूर प्रथा भी कहते है

प्रतिबन्ध → 1961 मे सागड़ी निवारक निरोधक अधिनियम पारित करा।

→ **दहेज प्रथा** : →

भारत सरकार ने 1961 मे दहेज निवारक निरोधक अधिनियम पारित कर इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

→ **डापरिया प्रथा** : →

राजा महाराजा दहेज मे कुछ कँवारी कन्या साथ मे देते थे।

→ **बेगार प्रथा** :→ मजदूर को काम के बदले मजदूरी ना मिलना

रोक → 1876

→ **त्याग प्रथा** :→ राजपूत परिवारों मे लड़की के विवाह पर भाट, चारण, ढोली आदि मुँह मांगी दान दक्षिणा के लिए हठ करते थे ये प्रथा कन्या वध हेतु उत्तरदायी मानी जाती थी।

→ इस प्रथा पर रोक 1841 मे वाल्टर कृत हितकारणी सभा ने लगाई

1841 → जोधपुर मे प्रतिबन्ध

1844 → बीकानेर ,, ,,

→ **दास प्रथा :** →

उपनाम → दासी | गोला | चाकर | दरोगा

दास दासी ऐसे व्यक्ति होते थे जो युद्ध के समय बन्दी बना लिए जाते थे। इनका एक अलग से विभाग होता था जिसे राजलोक कहा जाता था।

नोट → अगर राजा खुश होकर किसी दासी को अपने साथ रहने की अनुमति दे देता तो वह दास पड़दायत कहलाती थी।

→ राजा खुश होकर अपने साथ रहने वाली दासी को मांगलिक अवसरों में उपस्थित होने की व आभूषण पहनने की अनुमति दे देता तो वह दासी पासवान | खासवान कहलाती है।

→ **संथारा प्रथा** :- जैन धर्म मे अन्न जल त्यागकर मृत्यु वरण कर लेना

↳ अन्य नाम → सल्लेखना प्रथा।

→ **आन प्रथा** :- मेवाड़ शासको के प्रति भक्ति भाव की शपथ लेना

रोक → 1863 मे

→ **पर्दा प्रथा** :- यह हिन्दुओ का नैतिक तथा मुस्लिमों का धार्मिक नियम था

→ इस प्रथा पर रोक हेतु स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया।

चारी प्रथा :→ लड़की का मूल्य लेना मूल्य ना देने पर लड़की को दूसरी जगह भेज देते थे।
इसका सर्वाधिक प्रचलन - खैराड़ (भीलवाड़ा, टोंक) में था।

नाता प्रथा :- (पुनः विवाह)
↳ पत्नी जिन्दा पति को छोड़कर दूसरे के पास जाती थी।

छेड़ा फाड़ना → भीलों में तलाक की प्रथा

→ <u>मौताणा प्रथा</u> :→ आदिवासियों मे मौत का हर्जाना देना।

→ <u>कुकड़ी प्रथा</u> : → सांसी समाज मे विवाह से पहले लड़की को चरित्र की परिक्षा देनी होती है।

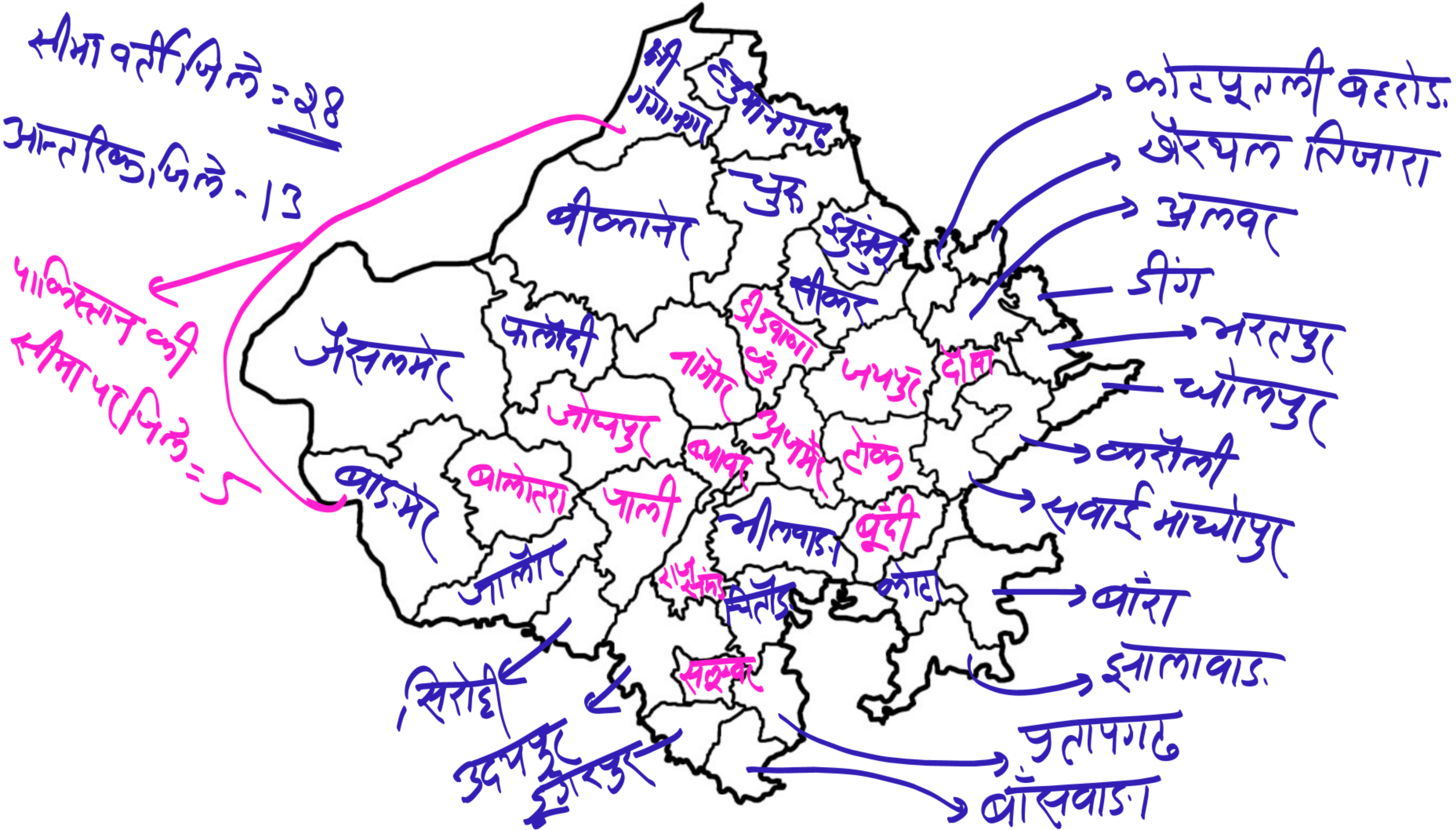
सीमावर्ती जिले = 28
आन्तरिक जिले - 13
पाकिस्तान की सीमा पर जिले = 5
श्री गंगानगर
हनुमानगढ़
चुरू
बीकानेर
झुंझुनूं
सीकर
जैसलमेर
फलोदी
डीडवाना कुचामन
नागौर
जयपुर
दौसा
जोधपुर
ब्यावर
अजमेर
टोंक
बालोतरा
बाड़मेर
पाली
जालोर
भीलवाड़ा
बूंदी
राजसमंद
चित्तौड़
कोटा
सलूम्बर
सिरोही
उदयपुर
डूंगरपुर
कोटपूतली बहरोड़
खैरथल तिजारा
अलवर
डीग
भरतपुर
धौलपुर
करौली
सवाई माधोपुर
बारां
झालावाड़
प्रतापगढ़
बांसवाड़ा